<u>मानचित्र</u> (Map)

अग्नि प्रकाश शर्मा
विभागाध्यक्ष
रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग
उदय प्रताप कालेज,वाराणसी

<u>अर्थ</u>- मानचित्र दो शब्दों **'मान'** और **'चित्र'** से मिलकर बना है जिसका अर्थ **किसी माप या मूल्य को चित्र द्वारा प्रदर्शित करना**। मानचित्र को अंग्रेजी भाषा मे **'मैप'(Map)** कहते है। **'मैप'** शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **'मैप्पा' (Mappa)** शब्द से हुई है जिसका अर्थ **'कपडे का मेज पोश/टुकडा'** या **'रुमाल'** होता है।

अतः किसी कपड़े या कागज मे बना मानचित्र किसी बडे भूभाग को छोटे रूप में प्रस्तुत करते हैं जिससे एक नजर मे भौगोलिक जानकारी और उनके अन्तर्सम्बंधो की जानकारी मिल सके।मानचित्र को नक्शा भी कहा जाता है।

<u>परिभाषा</u>-

सामान्य अर्थ में मानचित्र का तात्पर्य,"पृथ्वी के ऊपर दृष्टिगत होने वाले पृथ्वी अथवा उसके किसी भाग का परम्परागत चिन्हो द्वारा छोटे पैमाने पर प्रदर्शन मात्र है।"

समय-समय पर अनेक विद्वानों ने मानचित्र को अपने-अपने शब्दो मे परिभाषित किया जिसमे मुख्य निम्न हैं-

इरविंग रेंज के अनुसार, "कई मानचित्र धरातल के प्रतिरूप का ऊपर की ओर से देखा गया रूढ चित्र होता है,जिसमें पहचान के लिये अक्षर लिख दिये जाते हैं।"

Erwin Raisz, "A map is, in its primary conception,a conventional picture of the earth's pattern as seen from above,to which lettering is added for identification."

फिंच तथा ट्रिवार्था के अनुसार, “मानचित्र धरातल के आलेखी निरूपण होते है।“

Finch and Trewartha, “Maps are graphic representations of the surface of the earth.”

एफ. जे. मॉक हाउस के अनुसार, “धरातल के किसी भाग के लक्षणों के समतल सतह पर निश्चित मापनी से निरूपण को मानचित्र कहते हैं।“

According to **F. J. Monk House**, “Map is a representation on a plane surface of the features of part of the earth’s surface, drawn to some specific scale.”

स्टैनले व्हाइट के अनुसार, “मानचित्र वह साधारण चित्र है जिस पर किसी देश अथवा प्रदेश की आकृति को समतल सतह पर चित्रित किया जाता है।“

अतः मानचित्र कागज के चौरस टुकडे अथवा किसी भी चौरस सतह पर सम्पूर्ण पृथ्वी अथवा उसके एक भाग के धरातल का सही अनुपात मे सांकेतिक चिन्हो द्वारा चित्रण है,जिसमें वस्तुयें ठीक उसी प्रकार प्रदर्शित की जाती है,जिस रूप में वह हवाई जहाज में उडते हुये निरीक्षक को दिखती है।

मानचित्र अध्ययन की शर्तें

मानचित्र अध्ययन के लिये हमे निम्न जानकारी होना आवश्यक है-

1. निश्चित भूखण्ड के मानचित्र पर प्राकृतिक एवं मानव निर्मित वस्तुओं को इंगित करने वाले सांकेतिक चिन्हों का सही ज्ञान।
2. भूमि खण्ड के सही विस्तार के लिये मापक (Scale) का सही उपयोग।
3. मानचित्र पर विभिन्न स्थानों की सही दिशा के लिये, मानचित्र मे उत्तर दिशा रेखा का सही ज्ञान।
4. मानचित्र के निश्चित भूखण्ड पर भूमि के उभार तथा गहराई को प्रकट करने वाली विधियो(जैसे- समोच्च रेखा आदि) का उचित ज्ञान।

मानचित्र की विशेषताएं

मानचित्र की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1. पृथ्वी अथवा उसके किसी भू-भाग का वास्तविक स्वरूप न होकर मात्र उसका छायांकन होता है। जिसे निश्चित अनुपात में बढ़ाकर या घटाकर प्रदर्शित किया जाता है।
2. मानचित्र देखने में ऐसा प्रतीत होता है जैसे भूमि के किसी भाग को वायुयान से देखा जा रहा हो।
3. पृथ्वी की आकृतियों को निश्चित सांकेतिक चिन्ह की सहायता से प्रदर्शित किया जाता है।
4. मानचित्र सदैव किसी समतल सतह पर निर्मित किया जाता है।
5. मानचित्र का निर्माण एक निश्चित मापक पर किया जाता है अर्थात् मानचित्र की लम्बाई-चौड़ाई तथा उसमें निर्दिष्ट भौगोलिक क्षेत्र की लम्बाई-चौड़ाई में एक निश्चित अनुपात होता है।

मानचित्र का सेना में महत्व

आम नागरिकों,भुगोलवेत्ताओ, अनुसंधानकर्ताओ,व्यापारियों आदि के साथ सेना तथा सैन्य अधिकारियों के लिए मानचित्र की उपयोगिता बहुत अधिक है क्योंकि इस विज्ञान की प्रगति एवं आधुनिक युग में युद्ध सर्वप्रथम मानचित्र में ही जीते जाते हैं।मानचित्र का सेना में उपयोगिता निम्न हैं -

1. एक सेनानायक युद्ध के पूर्व और युद्ध के समय युद्ध क्षेत्र का विस्तृत अध्ययन मानचित्र द्वारा करता है।
2. मानचित्र अध्ययन द्वारा यौध्दिक कार्यवाही या सैनिक गतिविधियों का सफल संचालन किया जा सकता है।

3. एक सेननायक मानचित्र के माध्यम से भूमि की बनावट,युद्ध में बाधक या सहायक भूमि की जानकारी प्राप्त कर सकता है।
4. सेना मानचित्र की सहायता से निश्चित समय पर लक्ष्य या युद्ध स्थान पर बिना पथ विचलित हुए पहुंच जाती है।
5. मानचित्र अध्ययन से दुश्मन सेना की स्थिति आदि सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारी ज्ञात कर सकते हैं।

मानचित्र का वर्गीकरण